उठती, "ठीक ही है, आप बीच में न पड़ा कीजिए,बच्चे बड़े हो गए हैं, हमारा जो कर्तव्य था, कर रहे हैं। पढा रहे हैं, शादी कर देंगे। गजाधर बाबू ने अनुभव किया है कि वह पत्नी और बच्चों के लिए केवल धनोपार्जन के निमित्त - मात्र हैं। जिस व्यक्ति के अस्तित्व से पत्नी मांग में सिंदूर डालने की अधिकारिणी है, समाज में उसकी प्रतिष्ठा है, उसके सामने वह दो वक्त भोजन की थाली रख देने से सारे कर्तव्यों से छुट्टी पा जाती है"। घर में अन्य काम करने केलिए एक नौकर को रखा था। गजाधर बाबू ने घर का खर्च कम कराने केलिए नौकर का हिसाब कर दिया। इस मामले में बच्चे माँ से शिकायत करते हैं - "घर में नौकर के अभाव में नरेंद्र को साइकिल पर गेहूं रखकर आटा पिसाने केलिए जाना पड़ेगा और बसंती को कॉलेज जाने के साथ लौटकर घर में झाड़ू भी लगाना पड़ेगा, ये सब उनके बस की बात नहीं है"। बडा बेटा अमर भुनभुनाया, "बूढ़े आदमी हैं, हर चीज़ में दखल क्यों देते हैं"। पत्नी भी बच्चों के साथ चर्चा में भाग ली। ये सब बातें अंदर कमरे में बैठकर गजाधर बाबू सुन रहे थे। कुछ देर बाद पत्नी को बुलाकर गजाधर बाबू ने कहा " मुझे सेठ रामजीमल की चीनी - मिल में नौकरी मिल गई है। खाली बैठे रहने से तो चार पैसे घर में आएँ, वही अच्छा है"। गजाधर बाबू पत्नी से अपने साथ चलने की बात कहने पर उसने इंकार कर दिया।

परिवार के सब लोगों ने बड़ी तात्परता के साथ रिक्षा बुलाकर सामान बांधकर उनको विदा कर दिया। उनके जाते ही वे सब लोग अपने -अपने काम में तल्लीन हो गये। अन्त में पत्नी पुत्र से गजाधर बाबू की चारपाई कमरे से निकाल देने के लिए भी कहती है। कमरे में चलने तक की जगह नहीं हैं। इससे व्यक्त होता है कि बूढ़े पिताजी और उनके सामान के लिए भी अपने घर में कोई स्थान नहीं।

"वापसी" कहानी के शीर्षक की सार्थकता गहरी है क्योंकि यह सिर्फ गजाधर बाबू के घर लौटने (सेवानिवृत्ति के बाद) को नहीं बल्कि आधुनिकता के दौर में परिवार से कटे, उपेक्षित महसूस करने वाली व्यक्ति की भावनात्मक (वापसी नौकरी पर) और फिर जीवन की जड़ों, अपनत्व की तलाश को दर्शाती हैं जो परंपरा और आधुनिकता के टकराव, पारिवारिक रिश्तों की कटु सच्चाई और अकेलेपन की विडंबना को उजागर करती है।

संक्षेप में मेरा विचार यह है कि उषाप्रियंवदा जी की कहानी यथार्थवाद का प्रतिनिधित्व करती है। वृद्धजीवन यथार्थ का खुला हुआ प्रस्तुतीकरण है, "वापसी" कहानी। गजाधर बाबू के द्वारा आदमी के अकेलेपन को, समय के साथ एक पीढ़ी की बदली हुई मानसिकता को सामाजिक परिवर्तनों के साथ आदमी के बदलते सम्बन्धों को सच्चाई से अभिव्यक्ति दी गयी है। गजाधर बाबू का अकेलापन आधुनिक जीवन के बीच उभरता हुआ विवशता का अकेलापन है।उनकी सारी खुशी एक गहरी उदासीनता में डूब गयी। अन्त में वह परिवार छोड़कर चला जाता है।

अंततः गजाधर बाबू वापस उसी एकाकी जीवन में लौट जाते हैं, जिससे परंपरा और आधुनिकता के टकराव व पीढियों के बीच की दूरी का मार्मिक चित्रण होता है। कहानी आज की पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के बीच के संघर्ष को दर्शाती है। परिवार से मिली इस उपेक्षा और अकेलेपन से दुःखी होकर,गजाधर बाबू यह महसूस करते हैं कि उन्हें अपने ही घर में कोई जगह नहीं मिली। वे फिर से भी नौकरी करने का फैसला करते हैं और उसी छोटे स्टेशन पर लौट जाते हैं, जहां से वे रिटायर हुए थे, क्योंकि घर में रहकर वे और अकेले हो जाते हैं। कहानी का शीर्षक "वापसी" सार्थक और बहुत प्रासंगिक भी है।

****

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. वापसी - मेरी प्रिय कहानियाँ - उषा प्रियंवदा
2. यथार्थवाद - शिवकुमार मिश्र
3. समकालीन कहानी की पहचान - डॉ. नरेंद्र मोहन

गुलज़ार के गीत 'कल्लू-मामा' में मनोवैज्ञानिक चेतना

अंकुर नाविक
मानसेवी शिक्षक, हिंदी विभाग, उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल(म.प्र.)

गुलज़ार बहुआयामी प्रतिभा के साथ अनेकों विधाओं- काव्य, गीत, पटकथा लेखन, फिल्म-निर्देशन आदि में सृजन करने वाले उल्लेखनीय रचनाकार हैं। साथ ही उर्द-हिंदी की बहुभाषिकता को साधने वाले गुलज़ार उर्फ़ सम्पूरन सिंह कालरा की चारित्रिक विविधता उन्हें बहुविषयी रचनाकार के रूप में सशक्त करती है। समूचे रचनात्मक वांग्मय की विविधता मानव मस्तिष्क के विविध पहलुओं व जटिल समस्याओं का ही प्रतिबिम्ब होती हैं। गुलज़ार की विविधता भी उनके जीवनानुभवों की प्रतिध्वनि-सी प्रतीत होती है। विशेषकर फिल्म गीत विधा, जिसमें सिनेमा के पात्र के मस्तिष्क में उतरकर, उससे एकाकार करते हुए गीत को धुन में पिरोया जाता है, गुलज़ार सशक्त व सहज रूप में उभरते हैं। उनके गीतों में जहाँ एक ओर उर्द के सलीके में बहती मद्धिम धारा है, तो दूसरी ओर भोजपुरी व मुंबईया भाषा के झरने परिस्थितियोंवश पटकथा व पात्रों की मनःस्थितियों के कारण स्वतः स्फूर्त होकर बह निकलते हैं।जैसे-'बीड़ी जलई ले' में उत्तर भारतीय ग्रामीण पात्रों की सिनेमाई परिस्थितियों व मानसिक उद्वेगों की अभिव्यक्ति हो, अथवा 'लकड़ी की काठी' में बाल-मन का भोलापन। प्रत्येक गीत में गुलज़ार निष्पक्ष व सहज होकर उपयुक्त शब्दों का सृजन करते हैं।

ऐसा ही 'सत्या' फिल्म का प्रसिद्ध गीत है- 'कल्लू मामा'। अपराध जगत में लिप्त पात्रों की मनःस्थिति, मस्ती एवं उच्छृंखलताओं के क्षणों को मुंबईया बोली में अभिव्यक्त करने वाला यह गीत तत्समय ही नहीं, अपितु हिंदी सिने जगत के समस्त गीतों के बीच भी अल्हदा ध्वनित होता है। यही कारण है कि यह गीत वर्तमान में 'कल्ट' की श्रेणी में रखा जाता है। किंतु इस गीत की अल्हदा ध्वनि व शब्दों का विश्लेषण करें, तो पाते हैं कि यह गीत बहुत सहज रूप में एवं अत्यंत प्रचलित शब्दों के साथ आधुनिक समय की मनोवैज्ञानिक पड़ताल करता है। इस गीत का हर शब्द स्वयं के मनोभावों, संवेदनाओं को दरकिनार कर, किए गये तमाम दुनियावी समझौतों से मुक्ति की बात करता है। अतः इस सामान्य से ध्वनित होने वाले गीत के विस्तृत मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की आवश्यकता उत्पन्न होती है। चूंकि गीत पहले से ही प्रसिद्ध है, 'कल्ट' श्रेणी में है अर्थात् वर्तमान जनमानस से जुड़ा हुआ है, इसलिये गीत की मनोवैज्ञानिक पड़ताल अप्रत्यक्ष रूप में वर्तमान जनमानस के स्वरुप को ही प्रतिबिम्बित करेगी, जो आगामी रचनाकारों व मानव-जीवन को और अधिक संवेदनशील व बहु-संवेदनाओं से युक्त बनाने में सहायक होगा।

'कल्लू-मामा' गीत में दो शब्द या कहें पात्रनुमा बिम्ब हैं, जो प्रतीक बनकर बार-बार श्रोता के कर्ण में गूँजते हैं- 'कल्लू मामा' और 'भेजा'। यहाँ 'कल्लू-मामा'- आधुनिक मानव का प्रतीक है और मस्तिष्क का देशज शब्द 'भेजा' कभी 'संवेदनशील बुद्धि' का प्रतीक बनकर उभरता है, तो कभी 'संवेदनहीन बुद्धि' का।

फिल्म 'सत्या' आपराधिक पृष्ठभूमि के वास्तविक जीवन में सक्रिय पात्रों की संवेदनाओं को निष्पक्ष होकर प्रस्तुत करने का प्रयास करती है। यदि 'कल्लू मामा' गीत भी सुनें तो, इसमें गीतकार ने अपराध जगत में सक्रिय मानव की संवेदनाओं को केंद्र में रखकर उसकी वास्तविक मनःस्थिति की ही अभिव्यक्ति सटीक शब्दों में की है, जिसमें 'भेजा' अर्थात् मस्तिष्क 'संवेदनशील बुद्धि' या 'हृदय' तत्व के रूप में चित्रित किया गया है।

"गोली मार भेजे में,
भेजा शोर करता है।
भेजे की सुनेगा तो,
मरेगा कल्लू.....।"

यदि अपराधी अपने 'भेजे' रूपी संवेदनशील मस्तिष्क या मनोवेगों की निष्ठुरता से अनदेखी नहीं करेगा, तो अपराध कर अपने व अपने परिवार के जीवनयापन हेतु संसाधन जुटाने में पूर्णतः अक्षम हो जायेगा। इसलिये गीत में बार-बार स्वयं रूपी 'कल्लू मामा' से संवेदनाओं को गोली मारकर ख़त्म करने का आग्रह किया जा रहा है। विभिन्न अपराधों को अंजाम देने के लिए संवेदनाओं को सुप्तावस्था में रखने का सुझाव दिया जा रहा है-

"सोच-वोच छोड़,
भेजा काहे को खरोंचना।
अपना काम माल हाथ आए,
तो दबोचना.....।"

अपराध की मानसिकता किन परिस्थितियों में जन्म लेती है, इसका भी सटीक चित्रण गीत के शब्दों में मिलता है-

"दिन में खोली, रात तीन बत्ती पे गुज़ार दी,
थोड़ी चढ़ गई तो तीन पत्ती में उतार दी।"

हथियार हाथ में लेकर जब व्यक्ति का तुच्छ अहम् उसकी मानसिकता पर हावी हो जाता है, तब अपराध छोड़कर कोई भी सामान्य नौकरी करने के ख्याल पर अपराधी का मन उससे यही कहता होगा-

"छोकरों की नौकरी करेगा कल्लू...।"

आपराधिक मनोविज्ञान की अभिव्यक्ति में जहाँ 'भेजा' शब्द 'संवेदनशील बुद्धि' का प्रतीक बनता है, वहीं आधुनिक व समकालीन मानव के मनोभावों की अभिव्यक्ति में वही 'भेजा' शब्द 'संवेदनहीन बुद्धि' का प्रतीक बन जाता है। समूचे गीत में 'कल्लू मामा' अर्थात् मानव को संवेदनहीन बुद्धि 'भेजे' को नकारते हुए, संवेदनशील बनकर जीवन को उन्मुक्त व स्वतंत्र सोच के साथ जीने का आग्रह परिलक्षित होता है। अतिबौद्धिकता, स्वार्थ-लिप्सा एवं विलासी जीवन का आकर्षण तत्समय परम अनिवार्य लग सकता है, किंतु कालांतर में मनुष्य को जीवन के वास्तविक आनंद का संज्ञान होने पर यही ज्ञात होता है कि निस्वार्थ सम्बन्धों की स्थापना व निर्वाह एवं उन्मुक्त तनाव रहित होने में ही जीवन की सार्थकता है।

"भेजे की सुनेगा तो मरेगा कल्लू।"
"खोपड़ी की झोपड़ी में फटका दे।"
एवं
"येड़े वो मरेगा जो डरेगा कल्लू...।"

जैसी पंक्तियाँ मानव मन के अत्यधिक तनाव, बौद्धिकता व उससे मुक्ति के भाव को ही पुनः पुनः अभिव्यक्त करने का प्रयास करतीं है, या कह सकते हैं एक सफल व सार्थक प्रयत्न करतीं हैं।

आधुनिकता का अनिवार्य भाग प्रतिस्पर्द्धा है, किंतु प्रतिस्पर्द्धा की जय और पराजय, दोनों ही जीवन के अनिवार्य अंग है। जीतने के उत्सव में अहंकार,अतिबौद्धिकता का नकार एवं हारने का तनाव भी अधिक न लेकर 'भेजे' अर्थात् 'बुद्धि' द्वारा उसका स्वीकार्य, इस गीत का दार्शनिक सार है। जिसकी इतनी सरल-सहज व अनूठी अभिव्यक्ति गुलज़ार के अतिरिक्त किसी भी अन्य रचनाकार हेतु असंभव प्रतीत होती है।

"अक्का-अक्का जो भी फटका झटका दे,
लटका-लटका डाल मटका और सटका दे।"
एवं
"आड़-फाड़-मार-छाड़ कटका दे कटका दे।"

जैसी पंक्तियों में आधुनिक मानव मन की उहापोह, मानसिक संघर्ष, तनाव, कुंठा के साथ मुक्ति का आग्रह मात्र ध्वन्यात्मक शब्दों में अभिव्यक्त करने का हुनर केवल गुलज़ार की अनूठी कलम में ही समावेशित दिखाई देता है।

आज का समाज जिस प्रकार आधुनिक होने का दिखावा करता हुआ विलासी जीवन के उपभोग हेतु लालायित दिखाई देता है, वहीं अपनी रूढ़ियों व अंधविश्वास से मुक्त होने का साहस करने में भी अक्षम सिद्ध होता है। अतः समाज का मानव सदैव अपने आप में मानसिक खींच-तान से जूझता रहता है। जिसके परिणामस्वरुप वह कुंठा ग्रसित है, मानसिक ग्रंथियों में जकड़ा हुआ है। 'कल्लू मामा' उसी बौद्धिक खींच-तान से बाहर आने हेतु प्रेरित करने वाला गीत है।

अपराध और अपराधी प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप में समाज की ही उपज है। अतः आपराधिक मानसिकता को समझने का प्रयास करना एक तरह से समाज के हाशिये की पड़ताल करने के समान है, जिसके बिना राष्ट्र व संसार नामक पुस्तक का हरएक पृष्ठ अधूरा है। यह गीत इसी दुरूह किंतु आवश्यक कार्य को अपराधी की भाषा में ही अनूठे अंदाज़ में अभिव्यक्त कर जाता है।

शोधात्मक दृष्टि से 'कल्लू मामा' और 'भेजा' की यह पड़ताल विश्लेषण द्वारा उपयुक्त निष्कर्षों व परिणामों को प्राप्त करती है। जो एक ओर तो इस गीत की प्रासंगिकता में वृद्धि करेगा, दूसरी ओर सिने गीतों की ओर गंभीर व आलोचनात्मक दृष्टिकोण को भी विकसित कर सकेगा। सिनेमा के गीतों की लोकप्रियता इस प्रकार के शोधों व आलोचनाओं के उपयोगी निष्कर्षों का पर्याप्त प्रसार भी करेगी एवं समाज के बौद्धिक वर्ग से उठकर गीतों की वास्तविक संवेदनाएँ आम मानव तक पहुँचकर बहुआयमी सिद्ध होंगी।

****

सन्दर्भ-

1. https://m.hindilyrics4u.com/song/goli_maar_bheje_men_maamaa.htm
2. सिंह रश्मि, सिंह राजेंद्र, शोध-आलेख: गुलज़ार : हिंदी सिने गीतों में स्त्री मन, ap-nimaati.com
3. गुलज़ार, गुलज़ार के गीत, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष- 2024, आईएसबीएन-978-9348157898
4. https://www.tring.co.in/popular-movies/satya
5. फ्रायड, मनोविश्लेषणवाद, यशपाल प्रकाशन, 2013 वां संस्करण, आईएसबीएन- 978-8170289968
6. तिवारी डॉ. राजेश कुमार, अपराध मनोविज्ञान : एक परिचय, कुमुद प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष- 2024, आईएसबीएन-978-819742444

(संपर्क-
मो.- 8602275446
ई-मेल- ankurnavik5@gmail.com)